Religious analysis of art of Nepal and Tibet in the current global scenario

(वर्त्तमान वैश्विक परिदृश्य में नेपाल एवं तिब्बत की कला का धार्मिक विश्लेषण)

Dr. Saurabh Saxena
Painting department,
Va. J. Sh. Gaya Prasad P.G. College, Sumerpur, Unnao, U.P. India
saurbhasaxena3@gmail.com

DOI: 10.52984/ijomrc1204

सारः

प्रस्तुत शोध–पत्र नेपाल एवं तिब्बत के प्राचीन कला का पुरातात्विक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। धार्मिक आधार पर नेपाल एवं तिब्बत में व्याप्त प्राचीन पाल शैली के मुर्तियों चित्रों एवं पोथियों का धार्मिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। तथा नेपाल एवं तिब्बत की कला–संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

संकेतः पाल शैली, प्रज्ञापारमिता, अवलोकितेश्वर

नेपाल एक धार्मिक देश है। आध्यात्मिक मूल्यों को वहाँ उच्च स्थान दिया गया है। तथा उनके जीवन का प्रत्येक कार्य धर्म आरै आध्यात्म भावों से परिपूर्ण है। जीवन के रहस्य को समझने तथा तत्व ज्ञान प्राप्त करने के लिये, अति प्राचीन काल से नेपाली धर्माचार्य और चिन्तक अपनी समस्त शक्तियों को लगाते चले आ रहे हैं। इसलिये वहाँ आज भी आध्यात्मिक चिन्तन के दर्शन की विचारधारा बहती चली आ रही है। नेपाल का शताब्दियों पूर्व से भारत के साथ घनिष्ट सांस्कृतिक सम्बन्ध बने हुये हैं। वहाँ की कला के प्रमुख स्रोत भारतीय प्राचीन ग्रन्थ और हिन्दू बौद्ध दशर्न माने गये हैं बौद्ध और हिन्दू धर्म के प्रसार ने नेपाल को मात्र धार्मिक और दार्शनिक दृष्टियों से ही नहीं अपितु साहित्य आरै कला को भी प्रभावित किया है। अतः भारतीय धर्म, दर्शन एवं कला को नेपाल के सांस्कृतिक इतिहास से प्रथक नहीं किया जा सकता है। सम्राट अशाके ने भगवान बुद्ध की शिक्षिओं, आदर्शों व जीवन दर्शन के सिद्धान्तों को सम्पूर्ण एशियायी देशों में प्रचार–प्रसार किया। उसे नेपाल के सम्राटों ने चिरस्थायी बनाने की दृष्टि से हजारो ं स्तूपों और बिहारों का निर्माण कराया, जिनमें अधिकाशं आज भी सुरक्षित है। यहाँ के असंख्य चैत्य–बिहार भारतीय संस्कृति आरै कला को गौरव बनाये हुये हैं नेपाली कलाकारों ने बौद्ध धर्म के आदर्शों को स्वीकार किया। बौद्ध धर्म, दशर्न एवं कला के प्रति उनकी अपूर्व निष्ठा आस्था और अनुराग था। भगवान बुद्ध के उपदेश मानव संस्कृति की अक्षय निधि है। उनकी शिक्षाओं और आदेशों के प्रसार ने नेपाल को एक नयी संस्कृति आरै नये जीवन दर्शन का संदेश दिया आचार्य शान्तिरक्षित ब्राम्हण बौद्ध और जैन धर्म दशर्न के असाधारण व्यक्ति थे। वे नेपाल गये और अपनी ज्ञान गरिमा के लिये अति लोक प्रिय हुये। साथ ही हिन्दू प्रचारक अपने साथ अपना धर्म सामाजिक रीति रिवाज तथा हिन्दू ग्रन्थ भी लेते गये थे हिन्दू, बौद्ध दर्शन जैन दर्शन व अन्य ग्रन्थों का वहाँ अध्ययन होता था। हिन्दू धर्म धीरे–धीरे वहाँ के जनसाधारण का धर्म बन गया। नेपाल में हिन्दू और बौद्ध दोनों धर्म प्रचलित थे वहाँ अनेक बौद्ध मठ और मन्दिर हैं। बौद्ध धर्म पर लोगों को अनन्य श्रद्धा थी उस समय नेपाल भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं कला का महान केन्द्र बन गया था। इस प्रकार भारतीय संस्कृति नेपाल के सास्कृतिक नेपाल के सांस्कृतिक इतिहास का एक अभिन्न अंग कहा जा सकता है।

नेपाल के शासक शास्त्रों दर्शनों तत्वाज्ञान तथा कला के ज्ञाता थे। उन्होंने बहुत से हिन्दू और बौद्ध मठ और मन्दिर बनवाये। ‘अन्नपूर्णा’ वहाँ का एक प्रसिद्ध मन्दिर है। एक अन्य भातगाँव के भैरव मन्दिर’ की छत को स्वर्ण से सजवाया गया था। वहाँ के शासक और समाज शिव के उपासक थे किन्तु गणेश, शक्ति, विष्णु आदि देवता भी पूजे जाते थे। भारत और नेपाल की प्रगाढ़ता एक का दृष्टान्त ‘पशुपतिनाथ मन्दिर’ है। शिवरात्रि के धार्मिक पर्व पर हजारों की संख्या में भारतीय ‘पशुपतिनाथ’ के दर्शन करने के लिये जाते है। विष्णु की भी उपासना होती थी और वैष्णवों के कुछ मन्दिर बने थे। वे बुद्ध के भी अनुयायी थे। वहाँ बौद्ध मठ भी बने। लुम्बनी के अशके स्तम्भ तथा मायादेवी का मन्दिर, जनकपरु में राम जानकी मन्दिर आदि तीर्थ स्थलों से ही भारतीय धर्म एवं कला की प्रतिष्ठा आकीं जा सकती है। संस्कृति के बहुत से हिन्दू ग्रन्थ यहाँ प्रचलित थे और शिक्षा हिन्दू परिपाटी में दी जाती थी। इस प्रकार नेपाल की संस्कृति प्रधानता हिन्दू है। हिन्दू धर्म और कला का वहाँ प्रचार था शिल्पियों को शास्त्रों के निर्देशानुसार, हिन्दू मूर्ति कला के आधार पर शिव, विष्णु, बुद्ध, बोधिसत्वों की मूर्तियाँ बनानी पड़ती थी। नेपाल में ब्राह्मण और बौद्ध दोनों प्रकार की मूर्तिकला देखने को मिलती है। हिन्दू देवीय प्रतिमाओं में पशुपतिनाथ, विष्णु, लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, हनुमान आरै बौद्ध मूर्तियाँ प्रमुख हैं। इन मूर्तियों

के साथ–साथ सैकड़ों मठ और मन्दिर भी बने जो दोनों देशों के परस्पर घनिष्ट सम्बन्धों को सूचित करते हैं। नेपाल के स्वयंम्भू चैत्य, अशाके चैत्य, नागार्जुन चैत्य व किण्डोर बिहार से जहाँ बौद्ध धर्म की महान परम्परा का पता चलता है। वहाँ दूसरी आरे उनसे नेपाली सांस्कृतिक थाती, स्थापत्य तथा चित्रकला का परिचय मिलता है। नेपाल के मन्दिरो ं की रचना जापान के पगोड़ा मन्दिरों जैसी है। यहाँ के अधिकाशं शिव मन्दिर हैं जो शिल्प शैली, कला और अलंकरण की दृष्टि से अपने आप में पूर्ण है।

कला सर्वेक्षण– नेपाल की महत्वपूर्ण कला निधि प्रायः विलुप्त है किन्तु लुम्बनी की खुदाई से

जो स्वर्ण, रजत, कांस व पत्थर की बनी प्रतिमायें प्राप्त हुयी हैं उनसे महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आये है।। इन खुदायी से प्राप्त कला सामिग्री काठमाण्डू के राजकीय पुरातत्व के संग्रहालय में सुरक्षित है। इसे सामग्री के अतिरिक्त काठमाण्डू और बागपत के निकटवर्ती क्षेत्रों से ऐसी भव्य मूर्तियाँ और स्थापत्य के उत्कृष्ट नमूने प्राप्त हुये हैं जिनसे नेपाल की हिन्दू और बौद्ध संस्कृतियों पर नया पक्र ाश पड़ता है।

पालशैली एवं चित्रकृतियाँ – पाल शैली का विकास नेपाल के साथ–साथ तिब्बत तक हुआ।

नेपाल की चित्रकला में पहले तो पश्चिमी भारत का प्रभाव बना रहा। बादर में उसका स्थान नव निर्मित पूर्वी शैली ने ले लिया। पाल राजाओं की संरक्षता में पुष्पित और पल्लवित यह चित्रकला पाल शैली के नाम से जानी गयी। इस शैली की कृतियां बौद्ध धर्म के महायान शाखा की पाेथियों में चित्रित है। बाद्धै धर्म पर भक्ति आरै तान्त्रिक आन्दोलन का प्रभाव था कि प्रज्ञापारमिता बौद्धों की सर्वश्रेष्ठ बन गयी आरै चित्रकारों ने उनके अनेक चित्र बनाये। राजा धर्मपाल ने प्रज्ञापारपिता तथा तन्त्रवाद का खूब प्रचार किया। इस प्रकार गृहस्थों को भी धार्मिक भावना से इनकी प्रतियाँ बनवाते पाते हैं। 'प्रज्ञापारमिता' अज्ञान का विनाश करती हैं। जिसके फलस्वरूप निर्वाण की प्राप्ति होती है। इस देवी की सभी प्राणियों के प्रति महाकरूणा का भाव है। प्रज्ञापारमिता के अनेक चित्र उपलब्ध हैं। इन चित्रों में उनके हाथों में चित्रित कमल देवत्व का प्रतीक है। इस विषय में एस0एन0 सक्सेना का कथन है कि *''पाल चित्र विद्या में चित्रित प्रज्ञापारमिता के एक चित्र में बायें हाथ में कमल लिये हुये चित्रित किया गया है। जो अपने ढंग की सुन्दर कृति है।''*[1] तान्त्रिक प्रक्रिया स्वरूप 'तारा' के अनेकों रूप सम्मिलित थे, यही कारण है कि उनकी विभिन्न रूप रंग वाली कृतियाँ बनने लगी। तारा देवी अपनी सौन्दर्यमयी भगिमा के लिये विख्यात हैं उनकी शारीरिक भगिमा त्रिभंग है। हस्त मुद्रायें भावपूर्ण है। पीछे प्रभा मण्डल है। जो उनके अलौकिक देवत्व को प्रतिबिम्बत करता है। इसके अतिरिक्त नेपाल में

'हरित तारा' के चित्र प्राप्त हुये हैं उनके नेत्र की भंगिमायें देवत्व की याद दिलाती है। मुकुट राजस्व का परिचायक है। पाल शैली नेपाल क्षत्रे में तथा तिब्बत में पूर्ण यौवन के साथ जीवित है। नेपाल में बज्रयान प्रतिमा विज्ञान तथा बुद्ध, बोधिसत्व बुद्ध की जीवन घटनाओं तारा व प्रज्ञापारमिता आरै हिन्दू देवी–देववताओं को नेपाली और पूर्वी पाण्डुलिपियों के चित्रण विधान में अद्भतु समानता है। नेपाली देवी–देवताओं की निर्माण पद्धति में भारतीय दैविय चित्रण परमपरा का अनुशीलन हुआ है। पाल शैली के नेपाली अविलाेकितेश्वर बाेधिसत्व सौन्दर्य युक्त चित्र है। 'अवलाेकितेश्वर' बाेधिसत्व के बायें हाथ में कमल देवत्व प्रतीक है। वे कमल पुष्प पराग के मध्य खड़ी मद्रा में चित्रित है। उनके मुख पर अपार करूणा और विश्व कल्याण का यह भाव दर्शित है। नेपाल में महायान सम्प्रदाय के बोधिसत्व अवलाेकितेश्वर, मंजूश्री, तारा प्रज्ञापारयिता के चित्रों की आत्मा पूर्णरूपेण भारतीय है।

वहाँ इन देवियों की उपासना का विधान भारत में सरस्वतीर की उपासना पद्धति से अलग नहीं है। तारा प्रज्ञापारमिता वसुन्धरा की उपासना का नेपाल में विशष महत्व है। तारा देवी को ललित आसन में दो कमल पुष्पों पर आसीन, हाथ में कमल पुष्प लिये हुये चित्रित किया गया है। इसी प्रकार धन सम्पदा ढायनी देवी वसुन्धरा को कुबेर के साथ वरद मद्रुा के चित्रित करने का विधान है। इन चित्रों पर तन्त्रवाद का प्रभाव है। बौद्ध धर्म की तन्त्रवाद विचार धारा को सम्पूर्ण एशिया की कला में अपनाया गया। कला और साहित्य ने भी इसके प्रसार में पूर्णरूप से यागे दान दिया। बौद्ध ग्रन्थों में तन्त्रवाद के सिद्धान्तों और क्रियाओं का उल्लेख है। नेपाल में बौद्ध तन्त्रवाद के प्रवेश के बाद नेपाली देवी–देवताओं को भारतीय वैदिक देवताओं की भांति विभिन्न प्रतीकों से अलंकृत किया गया। वहाँ से प्राप्त नाम, मातृ देवी व यक्ष की मूर्तियों में नेपालियों की धार्मिक प्रवृत्ति और मूर्ति उपासना की पुष्टि होती है। इस सर्वेक्षण से कला विधि का जो समृद्ध भण्डार प्राप्त हुआ है। उसके विषय मे ंविद्वानों का मत है कि नेपाली समाज वैष्णव आरै शैव धर्म का उपासक था। इन खोजों के पूर्व इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि यहाँ के कलावशेष इतने गौरवशाली रहे होगें। आशा की जा सकती है कि भविष्य में अन्य महत्वपूर्ण कला निधि प्रकाश में आयेगी जिससे नेपाल की प्राचीन संस्कृति का इतिहास और भी अधिक निखर कर सामने आयगे।

पाल शैली एवं चित्र कृतियाँ, सचित्र ग्रन्थ एवं पोथियाँ–

नेपाल में संरक्षित हस्तलिखित पाॅथियों और ग्रन्थों का बड़ा महत्व है किन्तु उनकी प्राचीनता का सही विवरण प्रस्तुत करना सम्भव नही है। अनुमानतः बौद्ध युगीन धार्मिक और सांस्कृतिक आदान प्रदान के समय में ये पोथियाँ भारत से नेपाल ले जायी जाने लगी थी। चीन और तिब्बत की भाँति नेपाल में भी सचित्र पाॅथियों के महत्वपूर्ण भण्डार है ये पोथियां भारतीय और नेपाली दोनों विद्वानों तथा कलाकारों द्वारा लिखी और चित्रित की गयी है। इन पाॅथियों पर पाल शैली का प्रभाव है। बंगाल के राजा धर्मपाल आरै देवपाल के संरक्षण में पाल शैली का उदय हुआ जिसके प्रमुख केन्द्र बंगाल, बिहार और नेपाल थे। पाल शैली की पाण्डुलिपियों में प्रज्ञापारमिता तथा महायान बौद्ध धर्म सम्बधित चित्रों की रचनायें विशेष रूप से हुयी हैं। इस शैली की प्रायः सभी पाण्डुलिपियाँ ताड़पत्र पर लिखी गयी हैं। ये पाॅथियाँ बंगाल, बिहार, नालन्दा व विक्रमशिला के अनेक केन्द्रों में लिखी गयी उनकी दफ्ती की जिल्दों पर भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित तथा उनकी शिक्षाओं के चित्र अंकित हैं जिनका आधार जातक ग्रन्थ है। इन चित्रों पर अजन्ता शैली का प्रभाव है। नेपाली और भारतीय हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के चित्रों के विषय, भाव प्रकाशन व मुद्राओं की अभिव्यक्ति परस्पर इतनी मिलती जुलती है कि इनको सहज में ही पहचाना नहीं जा सकता है। आनन्द कुमार स्वामी ने लिखा है कि *''बंगाली और नेपाली पाण्डुलिपियों में अन्तर इतना सूक्ष्म है कि उनमें विभदे करना कठिन है।''*[2] मोतीचन्द्र ने इस तथ्य की पुष्टि करते हुये कहा है कि *''नेपाल की चित्रकला बंगाल और बिहार के पाल स्कूल की छाया मात्र है।''*[3] इस शैली का प्रभाव नेपाली धार्मिक चित्रों, बैनर पेन्टिंग दैविक मुद्राओं तथा काष्ठ के बने पाटो ं पर भी देखा जा सकता है। नेपाल में दार्शनिक चिन्तन की परम्परा बहतु पुरानी है। यहाँ के मन्दिर व मठ भारत की भांति हैं। ऊपर से नीचे तक यह मन्दिर चित्रों से अलंकृत है। भारत की अपेक्षा नेपाल और तिब्बत में प्राचीनतम एवं बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थों तथा सचित्र पाॅथियों का बहुत संग्रह उपलब्ध है। नेपाल में हिन्दू पुराण की पाण्डुलिपियाँ लिखी गयी। 'शिवपुराण' की ताड़पत्र पर लिखी गयी पाण्डुलिपि पर शिव की आकृतियों पर समकालीन स्थापत्य का प्रभाव है। उनकी मुख मुद्रा के भाव, वस्त्रादि आभूषणों पर पूर्वी कला का प्रभाव दीख पड़ता है। यह पाॅथियाँ ब्राह्मण धर्म, बौद्ध धर्म और जैन तीनों धर्मों से सम्बन्धित है। मोरियो बुसागलीर के अनुसार, *''बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु नालन्दा में असंख्य लघु चित्र एव ं पाण्डुलिपियाँ निर्मित और अनुदित की गयी।''*[4] यह ग्रन्थि राशि नालन्दा, विक्रमशिला और उदन्तपुरी के विशाल ग्रन्थकारों से नेपाल पहुंची। भारत में इस प्रकार की सचित्र पाण्डुलिपियाँ एशियटिक सोसाइटी, कलकत्ता, शान्तिनिकेतन के संग्रहालयों में संरक्षित है। नेपाल में सुरक्षित भारतीय हस्तलिखित पाॅथियों को देखकर भारत आरै नेपाल के घनिष्ट सम्बन्धों की पुष्टि होती है आज भी नेपाल के मठों, मन्दिरों, बिहारों और ज्ञान भण्डारों में सुरक्षित पोथियों और पाण्डुलिपियों ने भारत देश को गौरवान्वित किया है।

संस्कृति भारत की मुख्य भाषा रही है। नेपाल में संस्कृत को वही स्थान प्राप्त है जो भारत में है। भारत से नेपाल जितने धर्म प्रचारक गये सभी ने संस्कृति भाषा का प्रचार प्रसार किया। संस्कृति के अतिरिक्त नेपाल में पाली भाषा का भी महत्व था। उस समय जिन पाॅथियों और ग्रन्थों की रचनायें हुयी उनके चित्रों में दार्शनिक भाव व्यंजना हुयी है। चित्रों की शैली में सजीवता है और कहीं कहीं लाके शैली की भाँति सुन्दर आलेखनों की रचनायें हुयी हैं। धर्म और दर्शन नेपाली ग्रन्थों की आत्मा एवं प्राण है। यहाँ के कलाकारों की सफलता का रहस्य आध्यात्मिक एवं दार्शनिक भावों को उभारने के प्रयत्न में है।

तिब्बत–

तिब्बत धर्म प्रधान देश है। प्राचीन काल से ही वहाँ सामाजिक धर्म–दर्शन से अनुप्राणिक रहा है। धर्म के माध्यम से ही वहाँ दार्शनिक चते ना का उदय हुआ। इसका श्रेय वहाँ के सन्त लाभाओं को प्राप्त है जिन्होनें सामाजिक जीवन का आध्यात्मिक आधार स्थापित किया। वे मानते थे कि धार्मिक कृत्य मानव को दिव्य सुख और आत्मज्ञान पद्रान करते हैं। वे घोषित करते है कि यह जगत मिथ्या है। इस संसार के सुख तथा एश्वर्य क्षणिक है, जिसमें स्थायी सुख का मूल नहीं होता। उनकी इन व्याख्याओं ने जन मानस को जीवन की क्षुद्र स्थितियों से ऊपर उठने का सन्देश दिया। शताब्दियों पूर्व से आज तक भारत के तिब्बत के साथ अटूट सांस्कृतिक सम्बन्ध बने हुये हैं। दोनों देशों की परम्पराये परस्पर इतनी स्थायी और विशाल है कि उनको एक दूसरे से सहज में विलुप्त और विस्मृत नहीं किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति आरै दार्शनिक चिन्तन का तिब्बती समाज पर विपुल प्रभाव पड़ा है। तिब्बत में हिन्दू धर्म का प्रचार नालन्दा से हुआ। भारतीय धर्म प्रचारकों और उपदेशकों ने तिब्बत जाकर अपने धर्म सिद्धान्त और ज्ञान दशर्न से उनका जीवन ही बदल दिया। उनके धर्म, धामिर्क साहित्य और धार्मिक विश्वास का मलू बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म था। बौद्ध धर्म ने वहाँ के जन–मानस को सर्व प्रिय धर्म, संस्कृति आरै कला पद्रान की। वहाँ के निवासियों का जीवन सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय है। इसका प्रभाव तिब्बत की सस्ंकृति आरै कला पर सहज देखा जा सकता है।

धार्मिक अनुभूतियों को कला के क्षत्रे में स्थान तिब्बती कलाकारों का प्रमुख लक्ष्य रहा है। वे मानते थे कि धार्मिक कला के द्वारा दुःख की निवृत्ति और परम सुख की प्राप्ति होती है। तिब्बत के सांस्कृतिक जीवन के उत्थान में बौद्ध कला का अभतू पूर्व योगदान है। वहाँ के मन्दिरों में भगवान बुद्ध, बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर के चित्र धार्मिक सौन्दर्योपासना के द्योतक है जिनमें चित्रकार की तूलिका ने

सजीवता आरै वाणी दी है। यहाँ चित्रों में भावना का स्वरूप भारतीय है। इन दैविक चित्रों और प्रतिमाओं का सृजन केवल उनकी पूजा अर्चना के उद्देश्य से ही भव्य देवालयों का निर्माण करना नही था अपितु उन प्रतियों की तेजास्वता तथा गौरवशीलता का प्रदर्शन करना था। इस प्रकार आत्मिक सौन्दर्य का अनुशीलम उनकी संस्कृति का आवश्यक अंग था। तिब्बत की वास्तुकला, शिल्पकला, चित्रकला व अन्य सभी कलाओं का आध्यात्मिक सौन्दर्य वहाँ के जन मानस की आत्मा के उत्कर्ष का साधन माना गया है। तिब्बत में बौद्ध धर्म पाँचवीं शताब्दी में पहुँचा। इस धर्म का प्रवेश पहले नेपाल में और उसके बाद तिब्बत में हुआ। कहा जाता है कि तिब्बत के सम्राट सांगसान ने चीन और नेपाल की राजकुमारी से विवाह किया। वे अपने साथ भगवान बुद्ध और शाक्यमुनि की प्रतिमायें अपने साथ लेती गयी। यह प्रतिमाये ल्हासा (Lhasa) के जांक हांग (Jok Hong) के मन्दिर में सुरक्षित हैं इन दोनों राजकुमारियों के प्रभाव से सम्राट ने बौद्ध धर्म की प्रतिष्ठा की तथा उसे राष्ट्रीय धर्म घोषित किया। परिणाम स्वरूप बौद्ध धर्म एवं कला की उन्नति तो हुयी ही, साथ ही साथ भारतीय विद्वानों, भिक्षुओं और कलाकारों को बलु ाकर तिब्बत की भूमि पर उनको सम्मानित किया गया। इतना ही नहीं, अनेक तिब्बती विद्वान भारत आये, बौद्ध ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया गया तथा ग्रन्थ निधियों के साथ साथ वे बौद्ध प्रतिमायें भी अपने साथ ले गये विक्रमशिला विश्वविद्यालय के आचार्यों को बौद्ध धर्म एवं दर्शन के प्रचार हेतु तिब्बत आमन्त्रित किया गया। भारत के आचार्य शान्तारक्षित तिब्बत गये तथा उनकी प्रतिष्ठा में रहने के लिये ल्हासा के निकट उदन्तपुरी के अनुकरण के आधार पर एक महाविहार का निर्माण कराया गया। बाद्धे कला की दृष्टि से यह विख्यात स्मारक था। उसकी भित्तियों पर बनाये गये चित्रों में धर्म दर्शन एवं सामाजिक जीवन का सफल चित्रण हुआ है। जातक कथाओं के चित्र वहाँ के जन–जीवन की धार्मिक आस्था के प्रतीक है। तिब्बत के मठ मन्दिरों की भिक्षुओं के रहने के लिये बनाया गया है। इन मठों में भगवान बुद्ध, बोधिसत्व अवलोकितेश्वर और अन्य देवी देवताओं की मूर्तियाँ एवं भित्ति चित्र अंकित है। जार्ज रोखि के अनुसार, *''तिब्बती कला में भारतीय परम्पराओं का अनुसरण हुआ है। अनेकों बौद्ध मूर्तियों के निर्माण में ग्रान्धारियन कला का प्रभाव लक्षित होता है।''*[5] तिब्बती भाषा में इन मठों और बिहारों को गोम्फा कहा जाता है। यहॉ के मठों में समयी मठ, डे पुङः, सेरा मठ, गाडेन एवं टाशी मठ, शाका मन्दिर आदि उल्लेखनीय है। ये मठ देव स्थल, कला एव ं संस्कृति के केन्द्र के साथ–साथ शिक्षा के प्रमुख केन्द्र रहे है। टाशी मठ में मैत्रिया की भव्य विशाल कॉंस की प्रतिमायें सुरक्षित है। शाक्य मन्दिर की छत दीवारों और खम्भों को स्वर्ण पत्रों से मढ़ा गया है। मन्दिर के मध्य में शाक्यमुनि भगवान बुद्ध की एक विशालकाय प्रतिमा स्थापित है। यहाँ अनेक बहुमूल्य ग्रन्थ भी मौजदू हैं जिनमें अधिकतर ताड़ पत्र और कागज पर लिखे गये हैं।

तिब्बती धर्म दशर्न एवं कला बौद्ध धर्म की अनुपम देन है। इस धर्म के माध्यम से ही भारत का सांस्कृतिक सम्बन्ध तिब्बत से स्थापित हुआ। भारतीय ग्रन्थावली ने तिब्बत को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण एशिया और यूरोप के देशों को भी प्रभावित किया है। हजारों की संख्या में भारतीय हस्तलिखित पाेथियां तिब्बत के मठ मन्दिरों में आज भी संरक्षित है। इन ग्रन्थों का महत्व महायान सम्प्रदाय को प्राप्त है। बौद्ध धर्म, दर्शन एवं कला विषयक ग्रन्थ नेपाल, चीन, जापान, कोरिया, लंका आदि देशों में उपलब्ध है। किन्तु दुर्भाग्यवश धार्मिक संकीर्णता और अज्ञानजनित अन्धविश्वासों के कारण तिब्बत की बहुमूल्य ग्रन्थ निधि नष्ट हो चुकी है। आज भी वहाँ विश्वास किया जाता है कि यदि इन पोथियों के टुकड़े पानी में मिलाकर किसी को पिलाया जाये तो भतू प्रेत आरै रोग दूर हो जाते है। इन कारणों से न जाने कितनी ही अमल्य कृतियां काल कवलिंत हो गयी है किन्तु जो अवशिष्ट मौजूद है उनके द्वारा इस देश की महान सांस्कृतिक उत्कृष्टता का अनुमान लगाया जा सकता है। इस साहित्य निधि का भारत और तिब्बत के बीच प्रचलित सम्बन्धों का आज भी अनेक दृष्टि से महत्व है। भारतीय कला की परम्परागत विशेषताओं की आभा नेपाल के बाद तिब्बत में फलती फूलती रही। नेपाल और तिब्बत के चित्रों में उतनी ही समानता है। जितनी कि चीनी और जापानी चित्रों में देखने को मिलती है। तिब्बत की चित्रकृतियाँ बौद्ध धर्म आरै दर्शन के महायान शाखा से सम्बन्धित है। एस0एन0 सक्सेना ने लिखा है कि *''तिब्बती शिलियों और चित्रकारों ने भारतीय तत्वज्ञान एवं दर्शन का अनुशरण किया है।''*[7] तिब्बत में अलोकितेश्वर की प्रतिमायें भारतीय ढंग की है। मोतीचन्द्र के अनुसार, *''तिब्बत की कला के उत्कर्ष में काश्मीर और नेपाली कलाकारों का महान यागे दान रहा है। दीर्घकाल तक नेपाली कलाकारों का प्रवेश तिब्बत में जारी रहा।''*[8] नेपाली कलाकारों ने वहाँ के कलाकारों की मुख्य भावनाओं को गहरायी से प्रभावित किया। यही कारण है कि आध्यात्मिक मनोवृत्ति का प्रभाव उनकी कला पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है। महायान सम्प्रदाय के अनुसार वहाँ के जन मानस की यह भावना प्रबल हो उठी थी कि संसार का कोई भी व्यक्ति नैतिक आचरण, आत्म ज्ञान, बुद्ध की उपासना अथवा उनकी शिक्षाओं को ग्रहण कर बोधिसत्व नैतिक आचरण, आत्म ज्ञान, बुद्ध की उपासना अथवा उनकी शिक्षाओं को ग्रहण कर बोधिसत्व का पद प्राप्त कर सकता है। तिब्बत के अध्येता विद्वानों ने यहाँ की सम्पूर्ण चित्रावली को तीन मुख्य वर्गों में विभाजित किया है। प्रथम वर्ग में वे चित्र रखे गये है जिसकी मुख्य भूमिका भारतीय बौद्ध मूर्तियों से उद्त है और रेखाओं के लिये चीनी कला का अनुसरण किया गया है। दूसरे वर्ग के चित्रों पर चीनी प्रभाव है किन्तु रेखाओं के लिये भारतीय शैली का अनुकरण किया गया है। तीसरे वर्ग में उन चित्रों को रखा गया है जो या तो प्रथम दोनों वर्गों के समिश्रण से बनाये गये हैं अथवा जिनका उन दोनों से कोई सम्बन्ध नही है। तीसरे वर्ग के चित्र ही वस्तुतः विशुद्ध तिब्बती चित्र कहे जा सकते है। इन तीनों श्रेणियों के अतिरिक्त कुछ चित्र ऐसे भी है, जिन पर नेपाली चित्र शैली का प्रभाव है। इस प्रकार चित्र बहुत ही मूल्यवान है। तिब्बती कला में दार्शनिक अनुभूति को उच्च महत्व दिया गया है। यहाँ चित्रपटों का निर्माण पाल शैली को अनुकरण पर हुआ है। मन्दिरों मे ं लटकाने वाले पट चित्र भी बनाये गये हैं। बहुसंख्यक बिहारों को चित्रों से अलंकृत करवाया गया जिन पर व्यापक रूप से बौद्ध धर्म का प्रभाव है। यहाँ के स्मारकों में अधिकाशं चित्र भगवान बुद्ध, पद्मपाणि अवलोकितेश्वर, बौद्धसत्वों तथा बौद्ध स्थाविरों से सम्बद्ध है जो हमें दुखमय संसार से मुक्तकर परम आनन्द में पहुँचाने का मार्ग प्रदर्शित करते है। संसार चक्र से छुटकारा पाने और दुःख से पीड़ित जनों के निवृत्ति के लिये भगवान बुद्ध के आदर्शों और धर्म की शिक्षाओं को प्रदर्शित करना ही है। उन कलाकारों का चरम लक्ष्य था। चित्रपटों के अतिरिक्त मडॅंला और कढ़ाई की कला का विशेष महत्व है। इन विविध कलाओं से नेपाली समाज की धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन की प्रगाढ़ता का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। उनकी उपासना विधि बौद्ध धर्म और हिन्दू परम्पराओं पर आधारित है। वहाँ के मठ और मन्दिर उनकी धार्मिक भावनाओं के केन्द्र बने हुये है। वहाँ के महत्वपूर्ण स्मारक, मन्दिर, स्तूप और विहार विविध धर्मों से सम्बन्धित मूर्तियों से सुसज्जित है। वहाँ हिन्दू, बौद्ध और जैन देवी देवताओं की मूर्तियाँ गढ़ी जाती थी। तिब्बती के आदि साहित्य से ज्ञात होता है कि उन्हाने देवताओं की कल्पना मानवीय रूप में की। वे मानव होकर भी अति

मानव थे। अतः उस परम शक्ति का साक्षात्कार करना अथवा उसके समीप पहुँचना उनका परम लक्ष्य था। देवी देवता की प्रतिमा निर्माण के विधान निश्चित थे। भारतीय और तिब्बती दर्शन में ईश्वर अमर आरै सर्वव्यापी माना गया है। उनके पैर पृथ्वी को स्पर्श नहीं करते। इसलिये उनकी प्रतिमाओं को शिल्प व चित्रों में कमल हाथ में लिये हुये कमल पर बैठी व खड़ी मुद्रा में दर्शित किया जाता है। तिब्बत में महासिद्ध अर्हतों और बुद्ध की उपासना प्रमुख रूप से की जाती है। *'कमल पर आसीन बुद्ध मानव रूप में कमल–सिंहासन पर बैठे हुये शान्ति मुद्रा दर्शित है।'* उन्हे स्वर्णिम काया में आभूषणों रहित, लाल पटुका धारण किये हुये, खुले वक्ष, बायें हाथ में अमृत घट व दायें हाथ को नीचे किये हुये निर्वाण प्राप्त अर्हतों के मध्य चित्रित किया गया है। तिब्बत में देवताओं को अनन्त कहा गया है। उनका स्वरूप आध्यात्म से आभासित होता है। तिब्बती चित्रों में भाव के साथ–साथ मुद्राओं की अभिव्यक्ति की कला अतुलनीय है। हस्त मुख, ओंठ, आँखे गहन भाव प्रकट करने में सहायक होते है। उनके द्वारा कलाकार अपनी घनीभूत भावों की सरस अभिव्यक्ति करते हैं। मुद्राओं की दृष्टि से तिब्बत की कला बेजोड़ है। विभिन्न आसनों में भगवान बुद्ध, अवलोकितेश्वर व अन्य बौद्ध देवी देवताओं की मूर्तियाँ और चित्र सूक्ष्मता की चरम सीमा तक पहुँच गये हैं। लौकिक आरै अलौकिक भावनाओं का इन कलाकृतियों में अनोखा सामजंस्य दीख पड़ता है। यहाँ के तान्त्रिक चित्र अद्भुत है जो किसी अज्ञात लोक की अभिव्यक्ति करते हैं। तिब्बती चित्रकला में तान्त्रिक स्वरूप निखरा जिसका विकास मन्त्र ज्ञान से हुआ। इसका प्रचार प्रसार तिब्बत आरै नेपाल में हुआ तथा इनके अनुयायियों ने तान्त्रिक आधार पर बुद्ध की प्राप्ति के लिये साधना की।

संदर्भ:

1. N. Saxena- Lotus in Indian Painting ,Page-109.
2. P.D. Ghose- Eastern School of Mediaval Painting (Chhavi), Page-92
3. Raja Tanda das Gupta – Nepalese Painting, Page-18
4. Mario Bussali-Indian Miniaturis, Page-30
5. George Roerich-Tibetan, Page-7
6. S.N. Saxena- Lotus in Indian Painting, Page-59
7. The Times of India-Annual-1996, Page-20
8. Zimmer – Myths and symbols, Page-118